Sl.No. :

नामांक Roll No.

No. of Questions – 3

No. of Printed Pages – 03

SS–34–DL–T.W. (Hindi)

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2024

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2024

हिन्दी टंकण लिपि

(TYPEWRITING HINDI)

समय : 1 **घण्टा**

पूर्णांक : 40

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें ।

2) प्रत्येक कागज के एक तरफ टंकण करें ।

3) प्रत्येक प्रश्न को नये पृष्ठ से आरम्भ करना है।

4) प्रत्येक लाइन के बीच में द्विगुणित अवकाश (Double Spacing) देकर टंकण करना है।

5) हर प्रश्न के लिए 20% अंक सजावट के निर्धारित है।

यहाँ से काटिए

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फाड़ें

यहाँ से काटिए

1) निम्न अवतरण को टंकित कीजिए –

टंकित अंक – 16

सजावट – 04

कुल अंक – 20

कर्म ही मेरा धर्म

दो शब्द है–कर्म और धर्म । कर्म क्रिया है, धर्म कारण है । शरीर को मन्दिर कहते है, आत्मा पुजारी है । न जाने कितने रूप होते है धर्म के । एक व्यक्ति का निजी धर्म होता है, जो जीवन को धारण करता है । व्यक्ति जैसे अपने इष्ट का चुनाव करता है, वैसे ही धर्म का चुनाव कर सकता है । यह धर्म उसके कर्मवीर्य अर्थात् वर्ण (चातुर्वर्ण) से भी मेल खाना चाहिए । धर्म का एक प्राकृतिक स्वरूप है, एक जीव के कर्म का स्वरूप है । हर व्यक्ति प्रकृति से उत्पन्न होता है, जिस प्रकार अन्य जड़–चेतन की सृष्टि होती है । इस सृष्टि का आधार पूर्व जन्म के कर्मफल होते है, जिन्हें इस जन्म में भोगना पड़ता है । ये प्रारब्ध कर्म कहलाते है । इन कर्मों को करने के लिए हमको शरीर–मन–बुद्धि तीन साधन प्राप्त है । याद यही रखना चाहिए कि ये तीनों साधन है, मैं नहीं हूँ । ये तीनों साधन त्रिगुण से प्रभावित रहते है । अतः इनके कर्म भी उसी परिपेक्ष्य में फल देते है । कर्म एवं कर्मफल का सिद्धांत सातों लोकों में समान रूप से लागू होता है । प्रकृति में हर तत्व का अपना धर्म होता है । पानी स्वभाव से नीचे की ओर बहता है । शीतलता पानी का धर्म है । अग्नि वस्तु को तोड़ती है, जलाती है, दाहकता अग्नि का धर्म है । धर्म ही कर्म की पहचान बन जाता है।

शरीर का धर्म है कर्म–क्रिया–कार्य । बुद्धि का धर्म तर्क, मन का धर्म मन्थन । आत्मा वैसे तो प्रत्येक जड़–चेतन के समान है, किन्तु कर्म भोग के प्राकृतिक आधार भिन्न है । ये तीन प्रकार की कार्यक्षमता उपलब्ध करवाता है – ब्रह्म, क्षत्र, विड् । इन्हीं के आधार पर प्रकृति ने ज्ञान, रक्षा व पोषण कर्मों को व्यवस्थित कर रखा है । ये तीनों वर्ण सभी चौरासी लाख योनियों में जड़–चेतन–देव–असुर–पाषाण आदि सब में होते है । जब कोई जीव स्वयं के वर्ण से बाहर जाकर कर्म करता है, तो उसकी सफलता संदिग्ध हो जाती है । चूंकि ये वर्ण आत्मा के हैं, अतः कर्म के साथ शरीर में उपलब्ध रहते है । जीव के अन्य कर्म विरोधाभासी होने के कारण आत्मा कर्म के साथ जुड़ नहीं पाता। पूर्ण मनो योग से कर्म होगा ही नहीं । जीव / व्यक्ति को हार माननी ही पड़ेगी ।

धर्म सामूहिक नहीं हो सकता । यह व्यक्ति / वस्तु की निजी सम्पत्ति की तरह है । दो भाई एक जैसे नहीं हो सकते । सामूहिक अथवा जिसे संस्था बनाया है वह तो सम्प्रदाय है, किसी व्यक्ति व विचार का अनुगामी है । रिलीजन को धर्म कहा, तो सम्प्रदायों को धर्म मानने लगें । सम्प्रदाय किसी एक गुरू के साथ आगे बढ़ते है । क्राइस्ट, महावीर, बुद्ध, मोहम्मद, नानक आदि उदाहरण है । उनके निर्देशों का पालन करते–करते आगें बढ़ते है । इनका धर्म से कोई लेना–देना नहीं है । मुझे अपने धर्म के अनुकूल जीना है । धर्म जाति वाचक नहीं है । व्यक्ति का स्वाभाविक धर्म आत्मा के वर्ण का वाचक है । उसी के अनुरूप अन्न, मन के विचार व इच्छाएं पैदा होती है । कृष्ण ने वर्ण को भी धर्म का हिस्सा माना–'अर्जुन तु क्षत्रिय है, तेरा धर्म युद्ध करना है ।' धर्म को यदि समझ रहे है तो सारी कामनाएं ही विवेकपूर्ण हो जायेगी । शरीर–मन–बुद्धि तीनों तो त्रिगुण के आवरण में है । वर्ण के अनुकूल बुद्धि ही काम करेगी। निस्त्रैगुण्य हो जाओ, प्रज्ञावान हो जाओ तो आपकी बुद्धि इन सीमाओं से ऊपर उठ जाएगी ।

सभ्यता बदलती है, जीवन जीने का ढंग बदलता है, आत्मा का स्वरूप नहीं बदलता । सभ्यता समय के साथ बदलती है, संस्कृति नहीं बदलती । अपने वर्णानुकूल कर्म ही हाथ में लेने होगें । वर्ण धर्म का हिस्सा है, जाति से लेना–देना नहीं है । वर्ण की यह व्यवस्था, आत्मा का जो मर्त्य भाग है, उस पर लागू होगी । यदि यह समझ कर द्वन्द्वमुक्त कर्म करे तो आगे की गति स्वतः ही सुधर जाएगी ।

2) निम्नलिखित पत्र को यथोचित प्रारूप में टंकित कीजिए :

टंकण अंक : 08
सजावट : 02
कुल अंक : 10

आत्माराम पुसाराम एण्ड संस
(अनाज के थोक व्यापारी)

ई–मेल – ए टी आर पु म @ जी मेल, कॉम
मो. सं. – 9999999999
पत्र सं. – 24/1/005

17/ई/141 मुख्य अनाज मण्डी,
राम–रहिम मार्ग,
अनन्तपुरा (उ.प्र.)
दिनांक : 17 जनवरी, 2024

सर्व श्री धर्मचन्द कर्मचन्द एण्ड कम्पनी,
गोल टांवर रोड़, राधा स्वामी कृष्ण मन्दिर
के पास,
जामनगर (गुजरात)

अति–गोपनिय

विषय :– आर्थिक स्थिति की जानकारी के संबंध में ।

प्रिय महोदय,

उपरोक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि आपने हमारे ही नगर के एक व्यापारी सर्वश्री रूपाराम मघाराम एण्ड संस की आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी चाही थी तथा यह फर्म आपसे एक–दो माह की अवधि के लिए 10,00,000/- रूपये तक के उधार माल देने की मांग रखी थी ।

हमारा इस फर्म से लगभग 7-8 वर्षों से संबंध है । इस बीच में अधिकांश लेन–देन रोकड़ में ही हुए है । जब कभी हमने इस फर्म को 1 माह तक के लिए उधार माल दिया, वे उसका भुगतान समय पर नहीं कर सकें । कई बार तो उनके द्वारा निर्गमित चैक भी अप्रतिष्ठित हो चुके है । अतः हमरी राय में इतनी बड़ी राशि का उधार माल देना अनुचित लगता है ।

कृपया इसे गोपनीय रखे ।

धन्यवाद ।
आत्माराम पुसाराम एण्ड संस के लिए,
सही /–
(आत्माराम)

3) निम्नलिखित सारणी को यथोचित रूप में टंकित कीजिए :

टंकण अंक : 08
सजावट : 02
कुल अंक : 10

निविदा–विवरण

क्र.सं	कार्य/सामग्री का विवरण	समय मास में	लागत (लाखों में)	धरोहर राशि	निविदा प्रपत्र शुल्क
01	रसोइयें	12	7.8	15,600	200
02	सफाईकर्मी	12	3.9	7,800	200
03	जल, विद्युत व पौधे अनुरक्षण	12	2.8	5,760	100
04	प्रयोगशाला सहायक	12	4.4	8,680	200
05	चौकीदार	12	3.3	6,500	100
06	स्टेशनरी	04	7.9	15,680	200
07	पोषाक सामग्री	03	8.4	16,740	200
08	सब्जियाँ एवं फल	12	6.5	13,000	200
09	स्कूल पोषाक सिलाई	04	1.8	3,500	100
10	गेहूँ पिसाई	06	2.0	4,000	100

□□□

DO NOT WRITE ANYTHING HERE